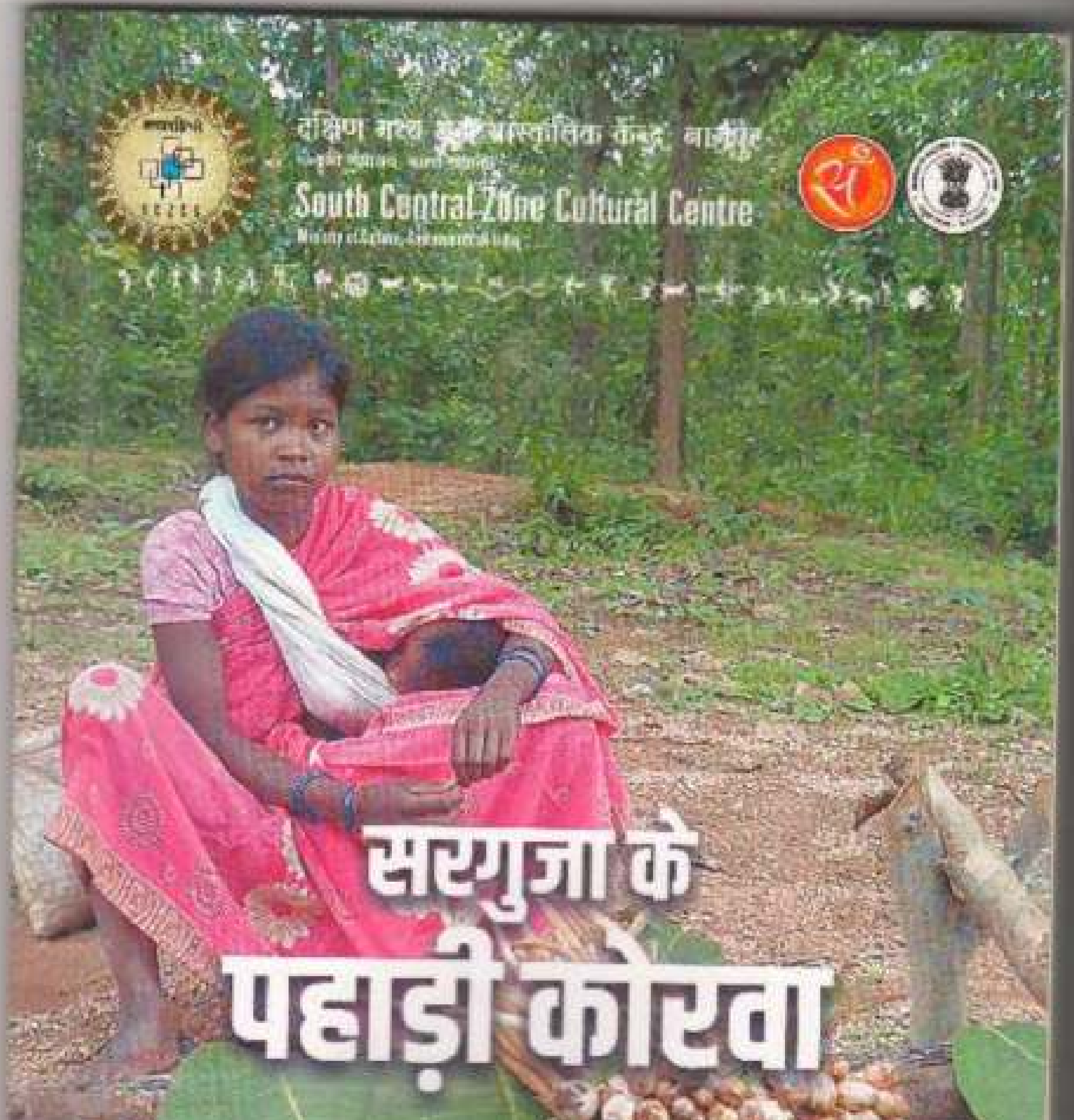

South Central Zone Cultural Centre
सरगुजा के
पहाड़ी कोरवा
सुश्री वंदना दत्ता

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)

—

शोध एवं प्रलेखन प्रकल्प

—

सरगुजा के पहाड़ी कोरवा

—

संपादक एवं प्रलेखिका :

सुश्री वंदना दत्ता

अंबिकापुर, जिला - सरगुजा (छत्तीसगढ़)

—

प्रकाशक:

निदेशक, दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर

—

वर्ष - 2020-21

अनुक्रमणिका

01. शुभ संदेश - द.म.क्षे.सां. केन्द्र के निदेशक डॉ. दीपक खिरवडकर 01
02. अपनी बात - सुश्री वंदना दत्ता 03
03. सरगुजा के पहाड़ी कोरवा का शीर्षक तथा उद्देश्य 05
04. छत्तीसगढ़ और सरगुजा का परिचय, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि 06
05. सरगुजा के पहाड़ी कोरवा और उसकी उत्पत्ति 11
06. जनसंख्या एवं भौगोलिक स्थिति 15
07. पहाड़ी कोरवा का आवास 21
08. शारीरिक बनावट और पहनावा 23
09. पहाड़ी कोरवाओं के रिश्तेदारी एवं स्वभाव 25
10. आजीविका तथा अर्थव्यवस्था 26
11. खान-पान, आचार-व्यवहार और रीति-रिवाज 29
12. धार्मिक जीवन एवं उनके प्रमुख त्यौहार 31
13. जन्म-संस्कार और वैवाहिक रीति-रिवाज 34
14. वेशभूषा एवं नृत्य गीत 40
15. मृत्यु-संस्कार 44
16. शासन की योजना एवं उनके लाभ 46
17. विशेषज्ञों के विचार
डॉ. प्रो. मुकुल रंजन गोयल 50
डॉ. अलका पाण्डेय 53
श्री रास बिहारी मिश्रा 55
श्रीमती मीरा शुक्ला 59

सरगुजा की
पहाड़ी कोरवा
जनजाति एवं सांस्कृतिक परिचय

डॉ. प्रो. मुकुल रंजन गोयल
विभागाध्यक्ष, समाज शास्त्र शा. महाविद्यालय, सूरजपुर, छत्तीसगढ़

पहाड़ी कोरवा मुख्यतः छोटा नागपुर के जनजातीय क्षेत्र की जनजाति है। विशेषकर मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ और बिहार के दुर्गम एवं वनाच्छादित पर्वतीय क्षेत्रों में पायी जाती है। छत्तीसगढ़ में इस जनजाति का सर्वाधिक संकेन्द्रण सरगुजा जिले में है। इसके अतिरिक्त ये रायगढ़, कोरबा और बिलासपुर में पायी जाती है। भारत सरकार द्वारा पंचवर्षीय योजना अवधि में कुछ ऐसी जनजातियों की पहचान की थी जो कृषि पूर्व की अर्थव्यवस्था (जिसमें शिकार एवं खाद्य संग्रहण करते है) में संलग्न है। जिनकी संख्या स्थिर एवं घटती हुई है, जिनकी साक्षरता का दर 2% से भी कम है, जिनको अन्य जाती या जनजातियों से पृथक्करण किया जाता है। उन्हें आदिम जनजाति माना गया है। इसमें छत्तीसगढ़ में बैगा, कमार, अबूझमाड़िया, बिरहोर और पहाड़ी कोरवा जनजाति आती है। 2005-06 में किये गए सर्वेक्षण में इनकी

जनसंख्या 34,122 परिगणित की गई है। जो कि छत्तीसगढ़ की कुल जनजातीय का 52% है। पहाड़ी कोरवा अपनी उत्पत्ति राम-सीता से मानते हैं। प्रचलित कथा से स्पष्ट होता है कि यह जनजाति अपना शिकारी, एकत्री और कृषि अर्थव्यवस्था के पूर्व की है। आज इनमें बहुत कम परिवर्तन हुए हैं।

पहाड़ी कोरवा प्रायः अन्य लोगों से दूर, अपनी समूह में रहकर जीवन बिताना पसंद करते हैं। प्रकृति से जुड़कर ऊँचे पर्वतों में रहते हैं। अन्य जनजातियों से दूरी बनाकर रखते हैं। इस जनजाति की एक शाखा डिहरी कोरवा या लेटाही कोरवा है जो उरांव, गोंड, नगेसिया आदि जनजाति के साथ रहते हैं। किन्तु इनके मुख्य निवास बस्ती से दूर होते हैं।

शिकार प्रतिबंध होने के कारण पहाड़ी कोरवा अब बड़े जानवरों का शिकार नहीं करते, किन्तु साँप, गोह, चूहे, गिलहरी, सभी तरह के पक्षी, खरगोश इनके आखेट परिधि में आते हैं।

कोरवा तेन्दू, चार, लाख आदि एवं शहद भी एकत्रित कर बेचा करते हैं। गाय और भैंस का दूध भी बेचते हैं। नमक, कपड़ा एवं वस्तुओं के लालच में ये जंगली क्षेत्र के चालाक व्यापारियों का आसान शिकार बन जाते हैं। मेहनत से प्राप्त शहद तथा अन्य वन्य सामग्री को अत्यंत कम मूल्य में बेच देते हैं। शिक्षा का अभाव व जागरूकता के कारण यह आदिम जाति आधुनिक सुविधाओं से दूर एवं अनभिज्ञ है।

इस आदिम जाति में तीव्र सामाजिक चेतना पाई जाती है। ये प्रत्येक छोटे समूह में रहना पसंद करते हैं। इसलिये अपने समूह के प्रत्येक सदस्य के विषय में इन्हें पूरा ज्ञान रहता है। ये छोटे-छोटे समूह में बिखरे हुए रहते हैं। पर्यावरण पर इनका अधिक निर्भरता है।

इस आदिम जनजाति की महिलाएं उन्मुक्त, कठोर श्रम करने वाली एवं अभाव में भी पारिवारिक दायित्वों का कुशलता से संचालन करने वाली होती है। वे पति की अनुगामिनी न होकर सहभागी होती है। इस जनजाति में स्त्रियों का मद्यपान करना सामान्य माना जाता है। 12-13 वर्ष की उम्र में विवाह हो जाने के कारण वे कई बार मातृत्व धारण करती है। विधवा हो जाने पर पुर्नविवाह भी शीघ्र हो जाता है। शारीरिक स्वच्छता से अनभिज्ञ होने के कारण विभिन्न चर्म रोगों से ग्रस्त होती। इन सब के बावजूद उनमें श्रृंगार प्रियता अधिक होती है। लकड़ी की तिलिया, मौसमी फूल और साप्ताहिक हाट में बिकनेवाली सस्ती सौंदर्य सामग्री ही इनके आभूषण होते हैं।

पहाड़ी कोरवाओं की इष्ट देवी "खुड़िया रानी" है। इसके अतिरिक्त, यह दुलादेव और ठाकुरदेव को भी मानते हैं। खुड़िया रानी की पूजा बलि से। पुराने समय ये देवी को प्रसन्न करने के लिए भैंसो और बकरों की बलि दिया करते थे। इनके प्रमुख त्यौहारों में देवथान, नवान्न और फगुआ है। देवथान दिसंबर माह में पूर्णिमा को मनाया जाता है, जिसमें इनके सभी देवताओं की पूजा होती है। नवान्न पर्व तभी मनाया जाता हैजब नया अनाज घर आता है। फगुआ फरवरी होली में मनाया जाता है। इन त्यौहारों में मांस और मदिरा का जमकर सेवन किया जाता है। स्त्री पुरुष रातभर नाचते गाते हैं। इस समय सामाजिक निषेध व्यवस्था शिथिल पड़ जाता है।

घने जंगलों में उठती हुई मांदर की थाप या दूर पर्वत शिखरों से टकराती उसकी अनुगूंज पहाड़ी कोरवा जनजाति की जीवन शैली और संघर्ष में उनके विजय को हमेशा ही रेखांकित करती है।

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर

South Central Zone Cultural Centre

Ministry of Culture, Government of India

56/1, Civil Lines, Nagpur 440001 (MS) INDIA | 56/1, सिविल लाईन, नागपुर 440001 (महाराष्ट्र)

■ Tel.: (0712) 2562974, 2565107 ■ Fax: 0712-2560968 ■ E-mail: sczccnagpur1986@gmail.com, director@sczcc.gov.in

■ https://www.sczcc.gov.in ■ www.facebook.com/sczcc ■ www.youtube.com/sczcc ■ www.flickr.com/sczcc